राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारती एवं पाश्चात्य राष्ट्र दृष्टि

दिनांक 10 फरवरी 2017

विश्व इतिहास में राष्ट्र की अवधारण का प्रथम दर्शन वैदिक ऋचाओं में होता है| अतः भारतीय संदर्भ में राष्ट्र की अवधारण अत्यंत प्राचीन है या हम कह सकते हैं कि मानव का इतिहास बोध जहाँ तक जाता है वहाँ तक भारत में राष्ट्र की अवधारण का दर्शन होता है| दूसरी तरफ यूरोपीय विचारकों की मान्यता है कि एक राजनीतिक शक्ति के रूप में राष्ट्रवाद फ्रेंच राज्य क्रांति एवं उसके कारण उत्पन्न हुई परिस्थितियों का परिणाम है|

भारतीय चिंतन में राष्ट्र केवल एक भौतिक निकाय न होकर भू, जन एवं संस्कृति के समवाय से उत्पन्न एक स्वयंभू सत्ता है| दूसरी तरफ पाश्चात्य चिंतन में राज्य को राष्ट्र का केंद्र बिंदु माना गया है| भारत में अनेक राज्यों के होते हुए भी उन राज्यों के कारण राष्ट्र के स्वरूप को कभी कोई बाधा नहीं पहुंची, क्योंकि यह संस्कृति की एकता पर आधारित राष्ट्र है| भारत में राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रीय एकता एवं एकात्मता का जन्म या संवर्द्धन परिस्थिति विशेष की प्रतिक्रिया के कारण नहीं हुआ, वह पूर्णतः स्वयंभू, भावात्मक तथा ऋषियों एवं चिंतकों के एकात्म दृष्टि से साकार हुआ है|

हमारा राष्ट्रभाव कोई राजनीति-जनित नहीं, वह हमारी श्रद्धा है, उपासना है| हमारे राष्ट्र का अन्य राष्ट्रों से भिन्न व्यक्तित्व एवं अवधारणा है, उसकी अपनी एक अस्मिता है| राष्ट्रीयता के पाश्चात्य मानदण्ड भारत पर ज्यों के त्यों लागू नहीं किये जा सकते, न ही उनके विकास क्रम के साथ भारत के विकास क्रम की तुलना की जा सकती| राष्ट्र की अवधारणा में इस विभ्रांति के कारण हमारे राष्ट्र जीवन में कभी-कभी कुछ बाधाएं भासित होने लगती हैं|

अतः आज यह आवश्यक हो गया है कि पाश्चात्य नेशन(राष्ट्र) तथा भारतीय राष्ट्र की अवधारण के अंतर को स्पष्ट रूप से समझा जाये जिससे राष्ट्र की उस मूल चेतना का अनुभव किया जा सके जो राष्ट्रीय एकात्मता की आधार है|

उपरोक्त उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए अरुंधती वशिष्ठ अनुसन्धान पीठ के द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में शनिवार, दिनांक 10फरवरी 2018 को एक-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है| संगोष्ठी में अधोलिखित विषयों पर शोध-पत्र आमंत्रित हैं |

१. राष्ट्र की भारतीय अवधारण |

२. राष्ट्र की पाश्चात्य अवधारणा |

३ राष्ट्र की भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारण में मूलभूत अंतर|

४. भारत की एकता के मूलभूत तत्त्व|

५. भारतीय राष्ट्र की अस्मिता की पहचान या उसकी मूलभूत चेतना (चिति)|

६. भारतीय राष्ट्र की चेतना शक्ति का वाह्य प्रकटीकरण (विराट)|

७. भारतीय राष्ट्र एवं उसकी संस्थाएं तथा उनके बीच सम्बन्ध |

८. भारतीय चिंतन में राष्ट्र में राज्य की भूमिका |

९. पाश्चात्य चिंतन में राष्ट्र एवं राज्य के बीच सम्बन्ध|

१०. भारतीय प्रतिमान पर विश्व की विभिन्न राष्ट्रीयताओं की पहचान |

११. राष्ट्र, मत-पंथ एवं विधि|

१० . उपरोक्त से सम्बंधित कोई अन्य विषय |

सेमिनार में भाग लेने के इच्छुक विद्वानों, शोधार्थियों से ऊपर लिखित व्यापक विषयों में से किसी पर या उससे संबंधित अन्य विषय पर जिसके द्वारा संगोष्ठी के उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में योगदान करने की संभावना हो, लगभग 3000 से 6000 शब्दों का लेख भेजने का अनुरोध है ।

डबल स्पेस में अंग्रेजी टाइम्स न्यू रोमन/ हिंदी कृति देव 010 फॉण्ट में टाइप आलेख 10 जनवरी 2017 तक हार्ड कॉपी और सॉफ्ट कॉपी में अधोलिखित पते पर डाक द्वारा और दिए गए इ-मेल द्वारा प्रेषित करें :

संयोजक
अरुंधती वशिष्ठ अनुसन्धान पीठ
महावीर भवन, 16/21 हाशिमपुर रोड
टैगोर टाउन, इलाहाबाद(यू पी) 211,002-
फोन और फैक्स :91-532-2466563, (मो.):09453929211
इ-मेल **nationalthought@gmail.com**, nationalpolicy.in@gmail.com

सेवा में,

श्रीमती/श्री/.डॉ/.प्रो----------

प्रेषक:

अरुंधती वशिष्ठ अनुसन्धान पीठ

(राष्ट्रीय पुनरुत्थान और नीति अनुसंधान के लिए एक संगठन)

महावीर भवन ,21/16 हाशिमपुर रोड टैगोर टाउन ,

इलाहाबाद -211002 उत्तर प्रदेश ,